७८ : मानव धर्म एक

१४ -०६-२०१३

मानव धर्म एक होने का आधार सहअस्तित्व है | सहअस्तित्व स्वयं में सत्ता में सम्पृक्त प्रकृति है | यह नित्य वर्तमान है | सदा सदा सह-अस्तित्व वर्तमान है | इसको नकारना बनता नहीं | यह टूटता नहीं, फूटता नहीं, नाप तौल में आता नहीं | समझ में आता है | यही विशेषता मानव में समाया है |

सर्वदेश काल में स्थित, कार्यरत हर मानव में सह-अस्तित्व को समझने का अधिकार रखा है | अधिकार समान है | इसे भूल करके अभी तक समुदाय चेतना में जी कर, जीव चेतना से अच्छा जीने के लिये जिया है | इसमें सफल हो गया | मानव ही एकमात्र इकाई है जो समझदार होना, ईमानदार होना, जिम्मेदार होना, भागीदार होना होता है | जीवावस्था, प्राणावस्था, पदार्थावस्था में ऐसा अधिकार नहीं है | पदार्थावस्था अस्तित्व धर्मा है | प्राणावस्था अस्तित्व सहित पुष्टि धर्मा है | जीवावस्था अस्तित्व, पुष्टि सहित अस्तित्व धर्मा है क्योंकि जीने की आशा रखता है | जीने की आशा रखते हुये, जीता हुआ हर एक प्रजाति का जीव देखने को मिलता है | इसे समझना मानव का अधिकार है | मानव ही समझने का एकमात्र अधिकारी है | सर्वदेश काल में मानव का जाति एक ही है, धर्म एक ही है | धर्म का मतलब है सुख | मानव सुखधर्मी है | सुखपूर्वकसुखपूर्वक जीना चाहता है | समाधान=सुख=मानव धर्म | इस पर मानव ज्यादा ध्यान नहीं दिया | सुखपूर्वक जीने का आशा अवश्य रखा | यह कैसा हो सकता है | इस पर अध्ययन नहीं हुआ | अभी विकल्प विधि से स्पष्ट हो गया है, समाधान=सुख=मानव धर्म | मानव धर्म एक होना ही सार्वभौमता का आधार है | सार्वभौमता व्यावस्था में सुस्पष्ट होता है |

अखण्डता मानव में स्पष्ट होता है | चारों अवस्था के साथ जीना ही सह-अस्तित्व है | सहअस्तित्व में जीना ही परम सत्य है | परम सत्य के साथ मानव सुखी होता है | सहअस्तित्व में अनुभव परम्परा ही समाधान के रूप में प्रमाणित होता है | हर मानव सुख धर्मी है | हर देश कालीय मानव सुखधर्मी है | हर समुदाय मानव सुखापेक्षा रखता है | इस प्रकार सर्वमानव का आधार सर्वदेश काल में एक होना समझ में आता है | यही समझदारी, इमानदारी, जिम्मेदारी, भागीदारी के रूप में प्रमाणित होता है | सर्वमानव समझदार होना चाहता है- चाहे ज्ञानी हो, विज्ञानी हो, अज्ञानी हो | उक्त तीनों स्थितियों में अपेक्षा एक ही है, समझदार होना | समझदारी ही ईमानदारी के रूप मे सोचने में आता है | समझदारी अनुभव के रूप में होता है | अनुभव सहअस्तित्व के रूप में होता है | इसे अच्छी तरह से परिशीलन किया है | विकल्प में स्पष्ट किया है | सह-अस्तित्व ही मानव धर्म एक होने का आधार है | मानव धर्म का परम्परा ही सार्वभौमता है | सार्वभौमता विधि से मानव अखण्ड राष्ट्र, अखण्ड समाज अथवा सार्वभौमता विधि से व्यवस्था को पा लेता है |

अखण्डता सार्वभौमता ही मानव परम्परा का वरदान है | इसे स्पष्ट कर देना शिक्षा में सम्भव हो गया है | इसे विकल्प विधि से प्रस्तुत किया है | इसे हर मानव परीक्षण कर सकता है | हर देश कालीय मानव परीक्षण कर सकता है | निश्चय कर सकता है | समाधानपूर्वक जीना हर व्यक्ति का अपेक्षा है | समस्या में जीना अपेक्षा नहीं है | सन २००० तक केवल समस्यायों को आंकलित करता ही रहा है | सन २००१ से विकल्प प्रचलित होना शुरू हुआ | अभी तक हजारों मानव विकल्प से सहमत हो चुके हैं | इस आधार पर कहा जा सकता है कि सर्वमानव में विकल्प की अपेक्षा है | विकल्प रूप में अखण्डता, मानव जाति एक होने के आधार पर अखण्डता है | मानव जाति एक होने के रूप में इसे बनाए रखना ही मानव परम्परा है अथवा

विकसित चेतना परम्परा अथवा जागृत चेतना परम्परा है, ऐसा कहा जा सकता है | रहता है विकसित चेतना ही | विकसित चेतना को हम जागृत चेतना कहते हैं | जागृत चेतना ही मानव का आचरण, देव मानव का आचरण, दिव्य मानव का आचरण के रूप में प्रमाणित है | यही मानव परम्परा है | यही विविधता में एकता है | मानव एकता विधि से सामाजिक अखण्डता को पा लेता है | विधि का मतलब न्याय है | न्यायपूर्वक मानव जीना चाहता है | समाधानपूर्वक जीना चाहता है | सत्य सहज विधि से जीना चाहता है | इन तीनों विधि से जीना ही जागृत मानव परम्परा है | मानव जात सुखी होने का एकमात्र रास्ता जागृति है | जागृति को समझना हर मानव का कर्तव्य है | हर देश कालीय मानव का कर्तव्य है | हर समुदाय का कर्तव्य है | कर्तव्य के साथ जीना ही सुख धर्म होना पाया गया है | कर्तव्य के साथ दायित्व निर्वाह होता है | दायित्व सम्बंधों के साथ होता है | सम्बन्ध चारों अवस्था के साथ, द्वितीय सम्बन्ध मानव, देव मानव, दिव्य मानव सम्बन्ध के साथ |

मानव चेतना के साथ न्यायपूर्वक जीना बनता है | यह चारों अवस्थाओं के साथ समान है | इसका आधार मानवीयतापूर्ण आचरण ही है | विकल्प विधि से मानवीयतापूर्ण आचरण को बताया गया है | स्वधन,स्वनारी/स्वपुरुष, दयापूर्ण कार्य व्यवहार के रूप में मानवीयतापूर्ण आचरण होना कहा है | इसमें से हर नर, नारियाँ विवाह को स्वीकार कर सकते हैं, विवाह को नहीं भी स्वीकार कर सकते हैं | विवाह को न स्वीकारने पर भी स्वधन रहता ही है, दयापूर्ण कार्य व्यवहार रहता ही है | इन दोनों विधा से जीना ही मानव चेतना है | अर्थात न्याय धर्म सत्य सहज अवधारणा ज्ञान सहित व्यवहार विधि से जीना मानवीयतापूर्ण जीवन का पहचान है | दूसरे क्रम में विचार विधा से जीना | विचार विधा में सह-अस्तित्वपूर्ण आचरण को प्रस्तावित करना होता है | मनुष्येतर तीनों अवस्थाओं में आचरण निश्चित है | मानव ही अपने आचरण को पहचानना शेष है | अभी तक मानव जीवों से अच्छा जीने के लिये जिया है | इसमें सफल हो गया है | यह सफलता आहार, आवास, अलंकार, दूरगमन, दूरश्रवण, दूरदर्शन के रूप में स्पष्ट हो गए है | क्रियान्वयन हो गये हैं, सब को समझ में आता है | अशेष मानव, मानवीयतापूर्ण आचरण को सर्वदेश काल में एक रूप में पाने के लिये आहार, आवास, अलंकार, दूरगमन, दूरश्रवण, दूरदर्शन सहित स्वधन, स्वनारी/ स्वपुरुष, दयापूर्ण कार्य व्यवहार के रूप में जीना होता है | यह समझदारी के साथ ही आता है अथवा समझदारी के साथ सफल होता है | इसे प्रत्येक व्यक्ति, प्रत्येक देश काल में प्रमाणित कर सकता है | इस प्रकार मानव धर्म एक होना प्रमाणित होता है | समाधान=सुख =मानव धर्म।

जय हो, मंगल हो, कल्याण हो |

- ए. नागराज | प्रणेता एवं लेखक | मध्यस्थ दर्शन (सह-अस्तित्ववाद) | दिव्य पथ संस्थान(भजनाश्रम) | अमरकंटक | जिला-अनूपपुर(म. प्र.)